एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद

संस्कृत विभाग

संधि-प्रकरण

स्वर संधि

- डॉ. विनोद कुमार रॉय

परिभाषा

संधि किसे कहते हैं?

“वर्णानां परस्परं सम्मिलने या विकृतिरुपजायते सा इत्येव संधिः।"

दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मिलने से जो विकार अथवा परिवर्तन उत्पन्न होता है उसे संधि कहा जाता है।

संधि कितने प्रकार की होती है ?

संधि तीन प्रकार की होती हैं।
1.स्वरसंधि या अच् संधि

2.व्यंजनसंधि या हल् संधि

3.विसर्ग संधि

स्वरसंधि या अच् संधि
(अ, इ, उ, ण्। ऋ लृ क्। ए ओ ङ्। ऐ औ च्।)

निकटवर्त्ती दो स्वरों के मेल से होने वाला परिवर्तन को स्वर संधि कहा जाता है।

यथा, रमा+ईशः = रमेशः (आ+ई= ए)

दीर्घसंधि:

सूत्र - अकः सवर्णे दीर्घ:

अक: = अ, इ, उ, ण् । ऋ ऌ क् । इनमें ण्, क् की गणना नहीं की जाती है।

अक् के स्थान पर यदि सवर्ण स्वर (अच्) परे हो तो दोनों वर्णों का मिलकर दीर्घ एकादेश हो जाता है ।

अ/आ + अ/आ =आ

रामायणम् = राम + आयनं
विद्यार्थी: = विद्या + अर्थी:
महाशय:= महा + आशय:
रत्नाकर: = रत्न + आकर:
गीतांजलि: = गीत + अंजलि:
परमार्थ: = परम + अर्थ:

इ/ई + इ/ई =ई

गिरीश्वर: = गिरि + ईश्वर:
रवीन्द्रः = रवि + इन्द्रः
अभीप्सा = अभि + ईप्सा
परीक्षण: = परि + ईक्षण:
महीन्द्र: = मही + इन्द्र:
नदीव: = नदी + इव:

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

भानूदय: = भानु + उदय:
भूपरि = भू + उपरि
सरयूर्मि: = सरयू + ऊर्मि:

ऋ + ऋ = ॠ

पितॄण: = पितृ + ऋण:
मातॄण: = मातृ + ऋण:

ऌ + ऌ = ॡ

होतॢकार: = होतृ + ऌकार:

----------xxx----------